दूध-जलेबी जग्गग्गा!

संकलन * तेजी ग्रोवर
चित्रांकन * रानू टाइटस

एकलव्य का प्रकाशन

दूध जलेबी जग्गग्गा !

Doodh Jalebi Jaggagga

बच्चों के खेल-गीत

संकलनः तेजी ग्रोवर

चित्रांकनः रानू टाइटस

पहला संस्करणः नवम्बर 2006 / 3000 प्रतियाँ

70gsm मेपलिथो और 130gsm आर्टकार्ड (कवर) पर प्रकाशित

ISBN: 81-87171-84-7

मूल्यः 18.00 रुपए

प्रकाशकः **एकलव्य**

ई-7/एच आई जी 453, अरेरा कॉलोनी

भोपाल 462 016 (म.प्र.)

फोनः (0755) 246 3380, फैक्स - (0755) 246 1703

www.eklavya.in

ई मेलः bhopal@eklavya.in

सम्पादकीयः books@eklavya.in

मुद्रक : भण्डारी प्रिंटर्स, भोपाल, फोन 2463 769

इस किताब के बारे में

इस किताब का शीर्षक **दूध-जलेबी जग्गग्गा** हमने कृष्ण कुमार की पुस्तक **बच्चे की भाषा और अध्यापक** से लिया है। उन्होंने स्वयं निरंकारदेव सेवक की एक कविता से ज़रा-सा खेलकर दो पंक्ति की यह विचित्र कविता लिखी है:
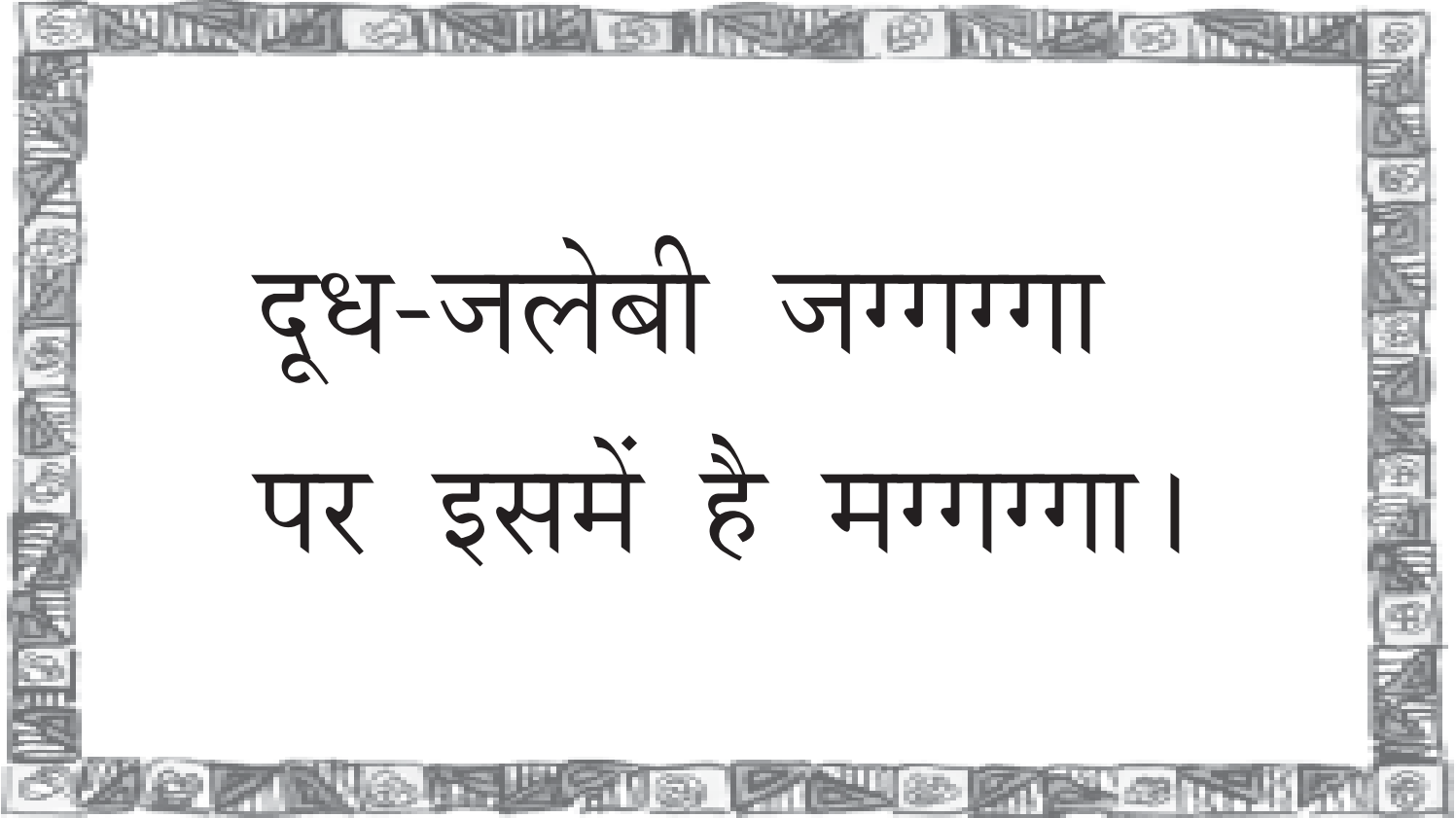
दूध-जलेबी जग्गग्गा
पर इसमें है मग्गग्गा

बच्चे की भाषा और अध्यापक में इस कविता का प्रसंग यह है कि सीखने की प्रक्रिया में बच्चे भाषा को खिलौने की तरह भी इस्तेमाल करते हैं। अर्थ की निर्मिति में ऊटपटाँग कविता एक अहम भूमिका निभाती है और बच्चों और बड़ों को समान रूप से रोचक लगती है। लेकिन खड़ी बोली में दो-दो पंक्ति की विचित्र कविताएँ बहुत कम हैं और इनकी कमी ख़ुद निरंकारदेव सेवक भी महसूस करते थे। लय-ताल-बद्ध कविता न केवल आसानी से याद हो जाती है, बल्कि बचपन की ये कविताएँ जीवन भर भूलती भी नहीं हैं। ऊटपटाँग कविता तो ताउम्र हमें जीवन को देखने के नित-नए ढंग सिखाती रहती है।

दूध-जलेबी जग्गग्गा में आसानी से याद हो जाने वाली ऐसी दो-दो पंक्तियाँ हैं जिनसे बच्चों को पढ़ने में मज़ा आएगा। शिक्षक भी पाठ्य-पुस्तकों से हटकर ताज़गी महूसस करेंगे। ख़ुद को देर तक आनन्द से भरा हुआ पाएँगे।

संग्रह पढ़ने वालों से हमें यह अपेक्षा भी रहेगी कि अच्छी छन्द-बद्ध ऊटपटाँग कविता अगर उनसे बन पड़े, या कहीं पढ़ने को मिले, तो हमें भेजना नहीं भूलें।

- तेजी ग्रोवर
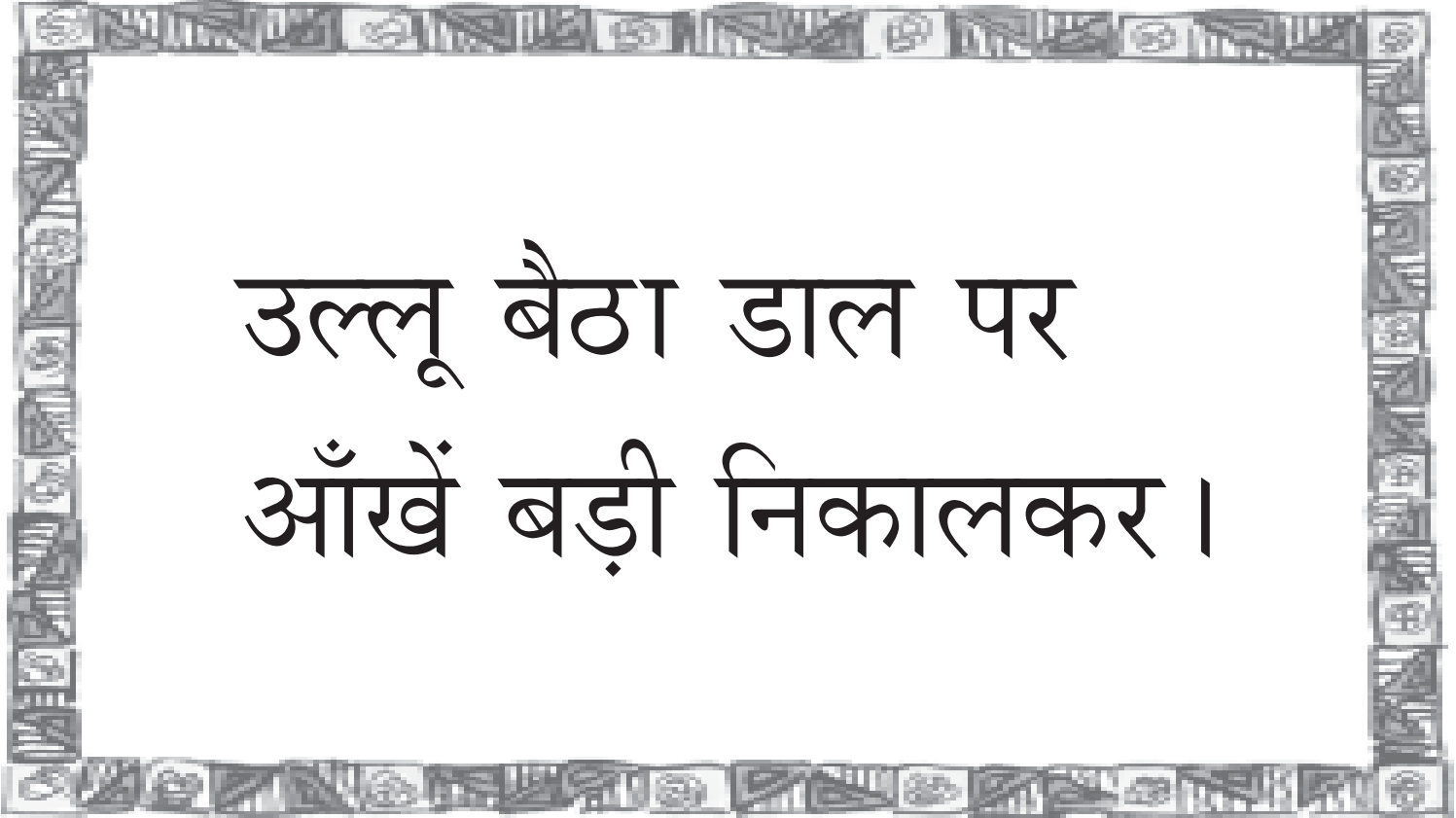
दूध-जलेबी जग्गग्गा
पर इसमें है मग्गग्गा।
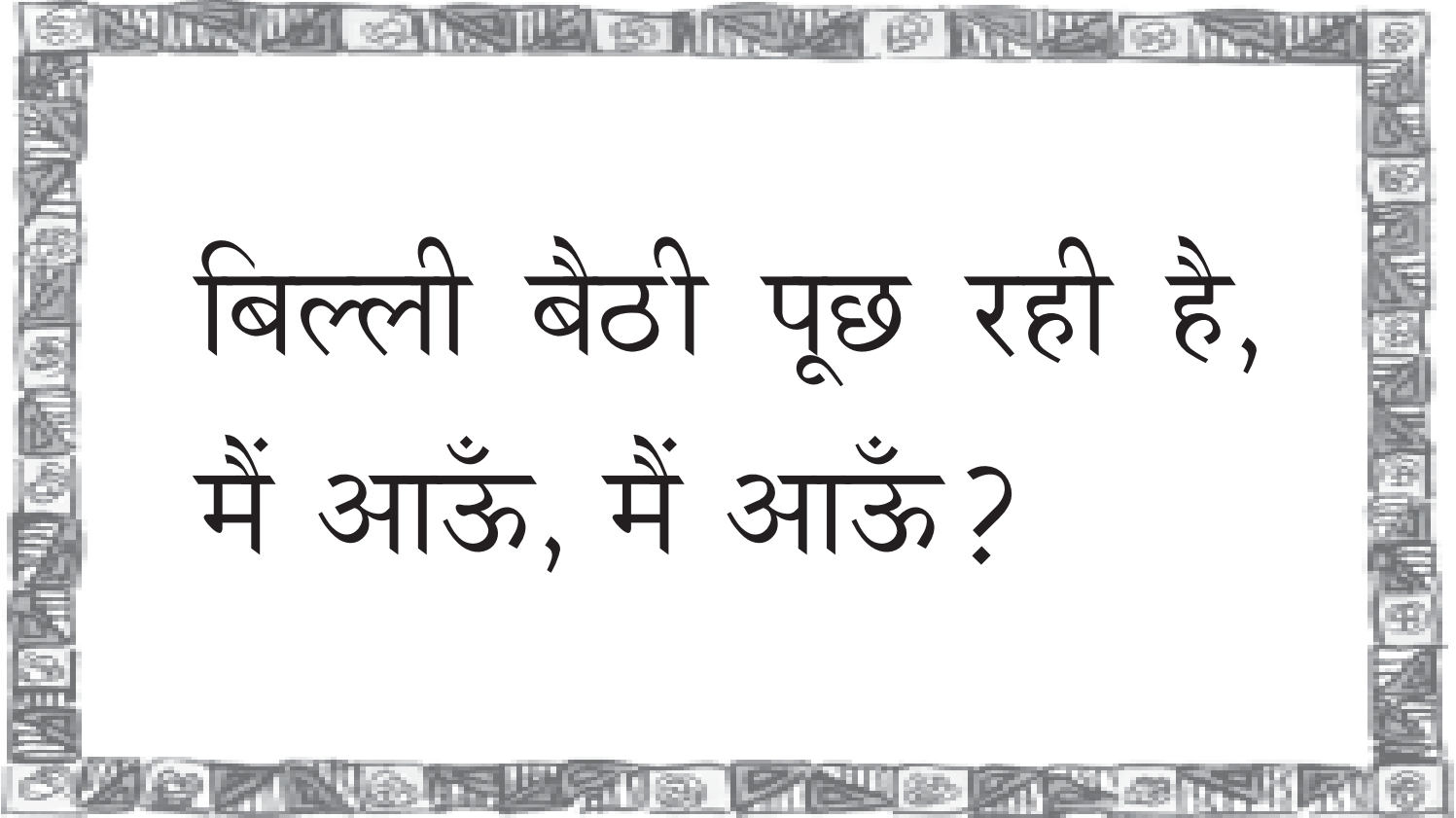
उल्लू बैठा डाल पर
आँखें बड़ी निकालकर।
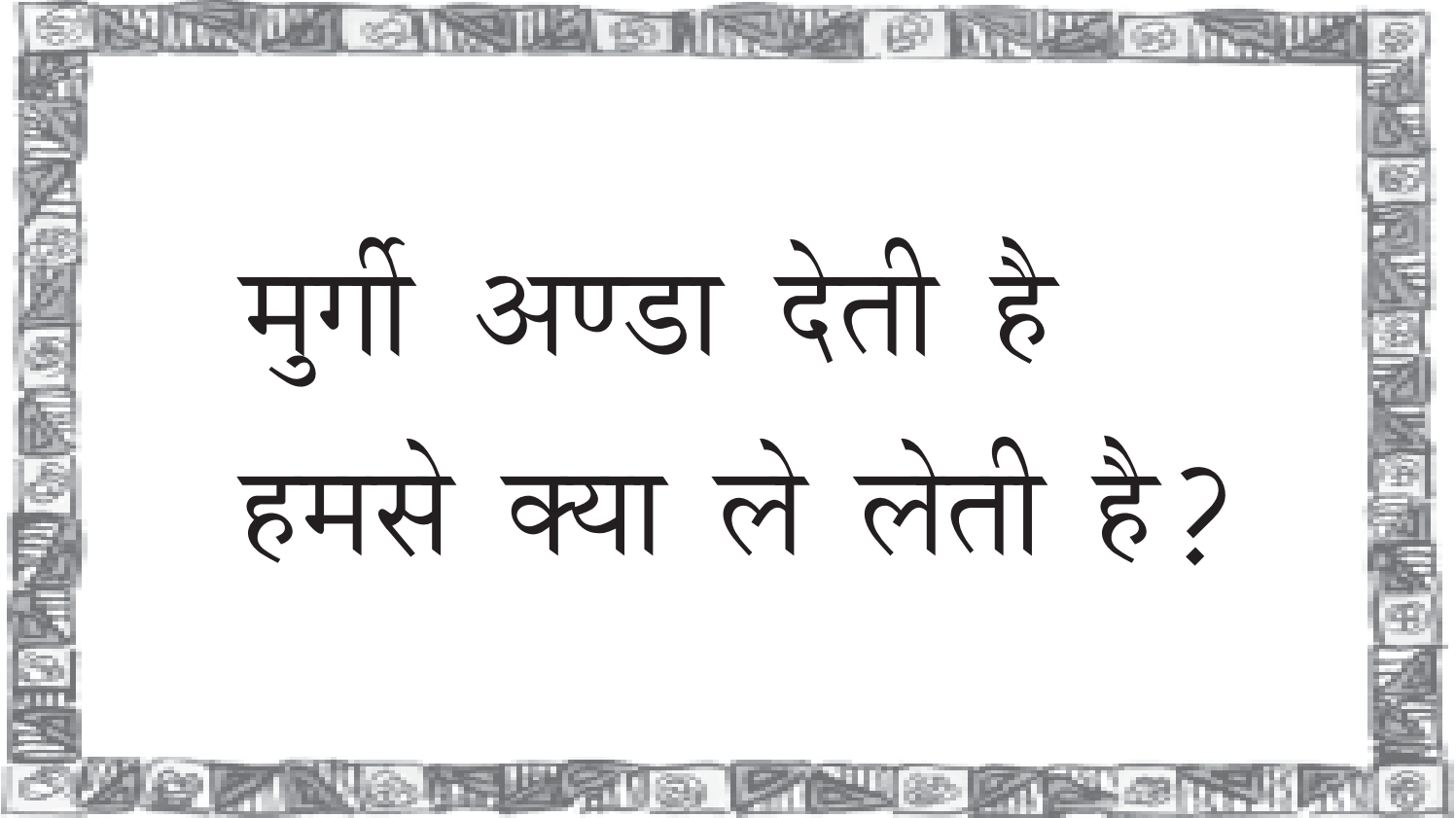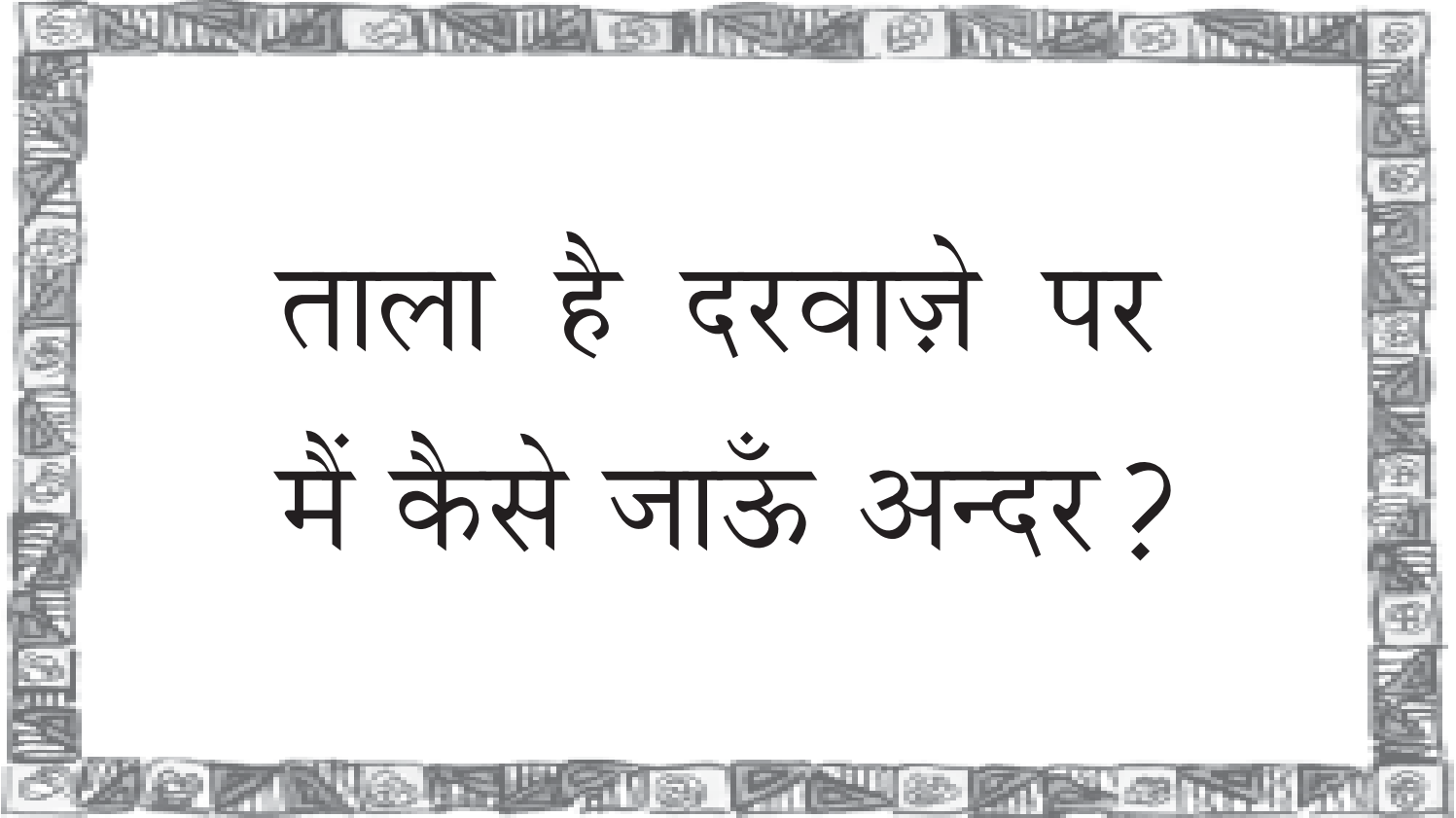
बिल्ली बैठी पूछ रही है,
मैं आऊँ, मैं आऊँ?
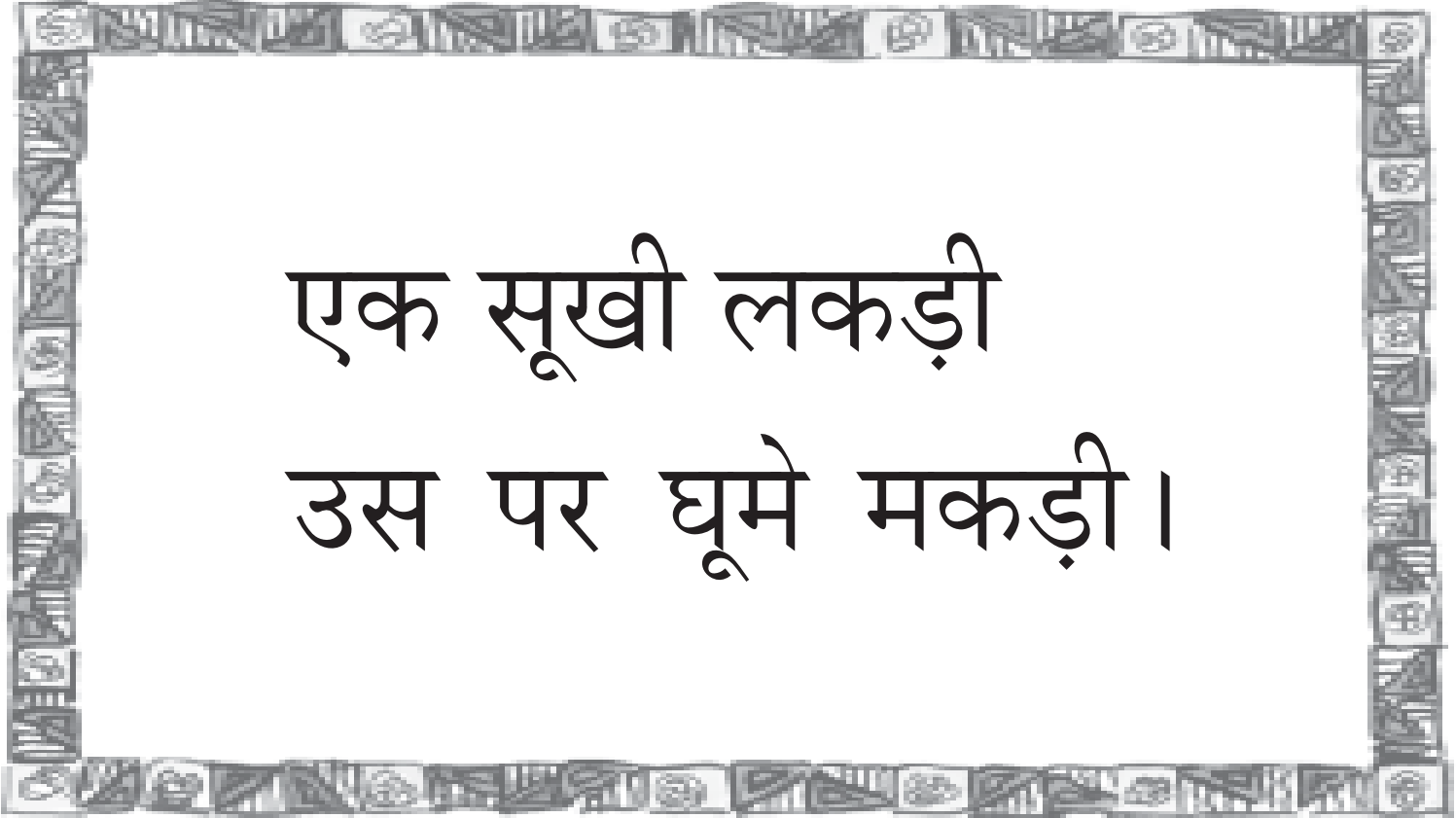
मुर्गी अण्डा देती है
हमसे क्या ले लेती है?

ताला है दरवाज़े पर
मैं कैसे जाऊँ अन्दर ?
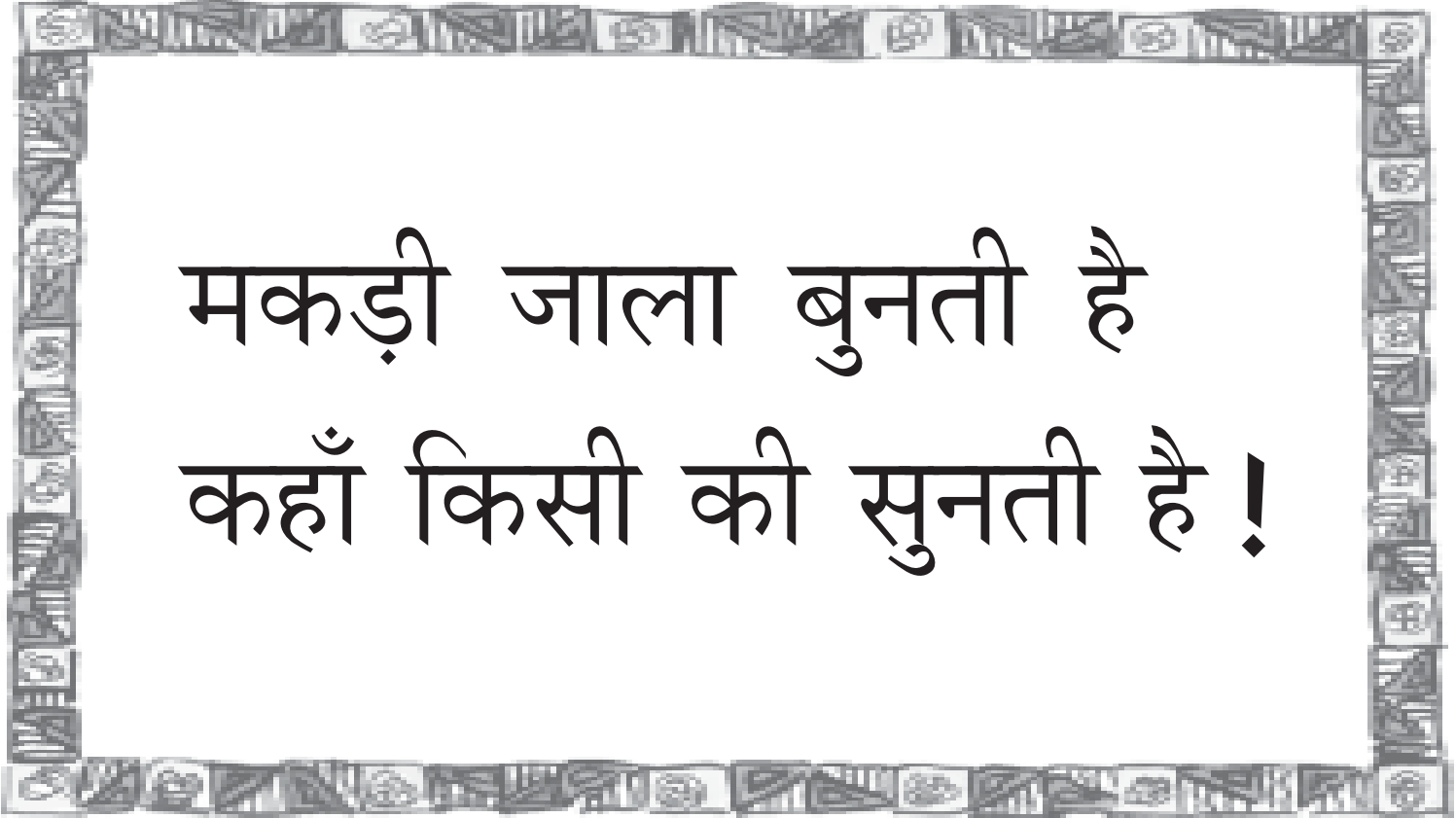
एक सूखी लकड़ी
उस पर घूमे मकड़ी।
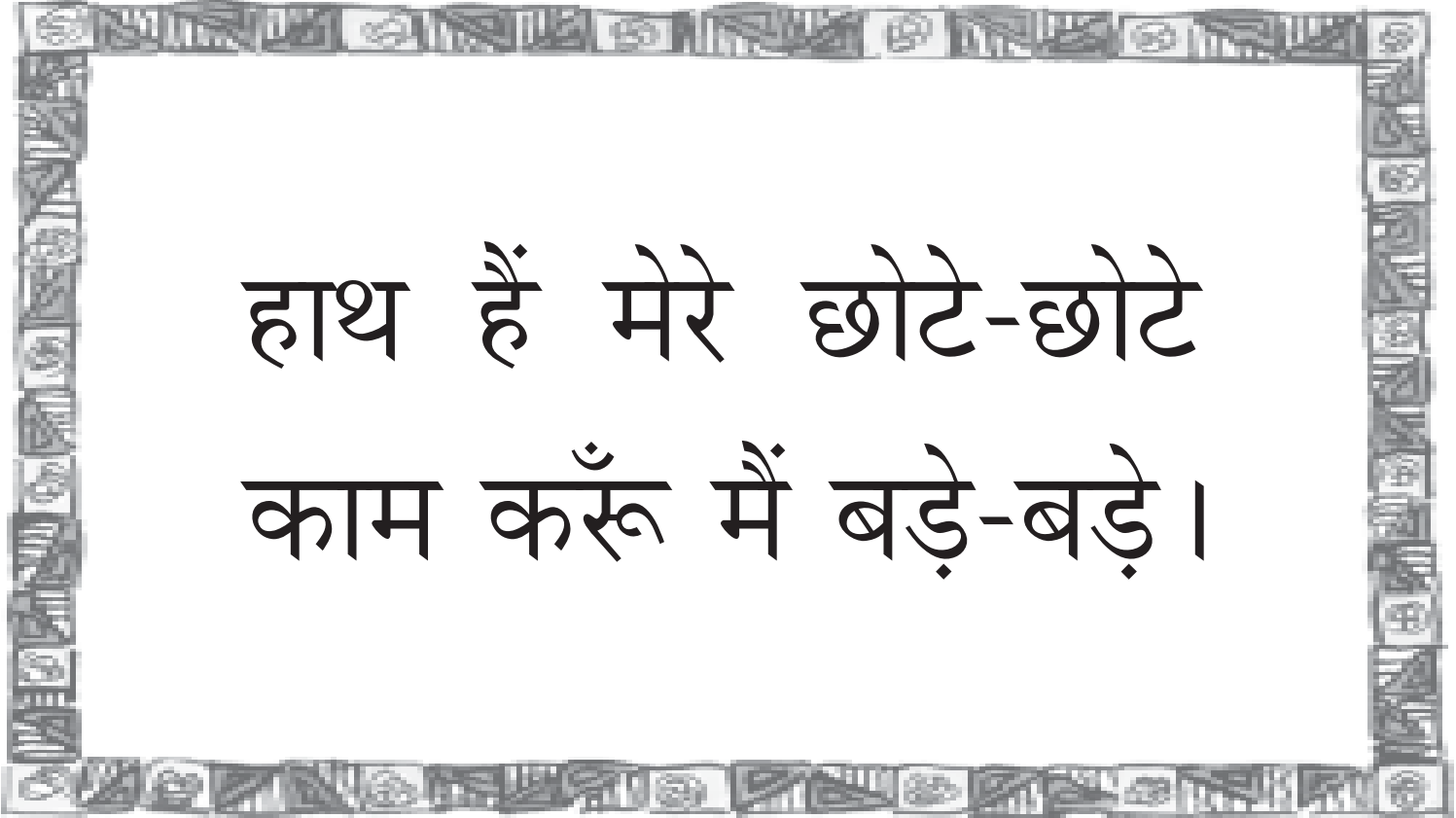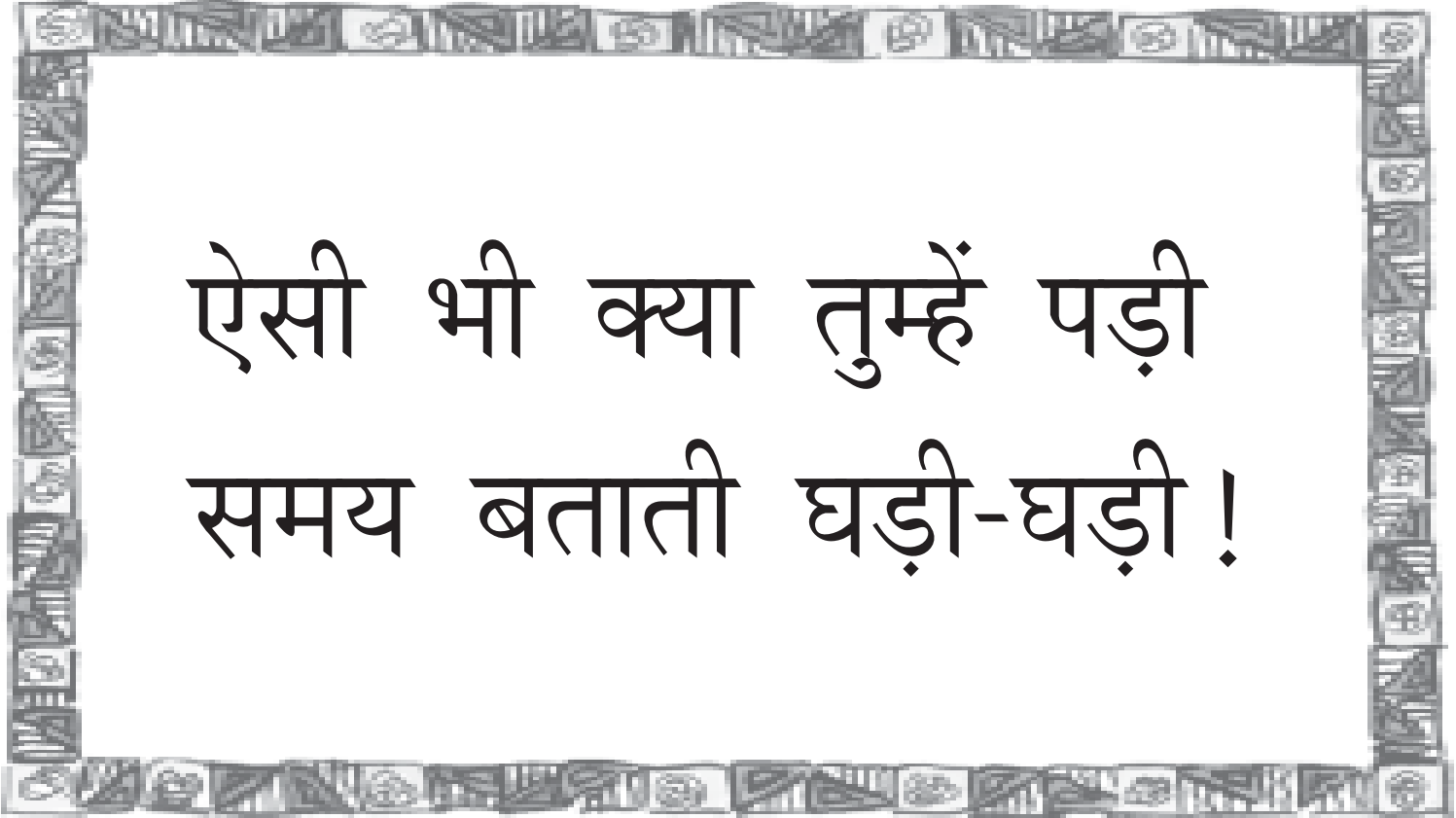
मकड़ी जाला बुनती है
कहाँ किसी की सुनती है !
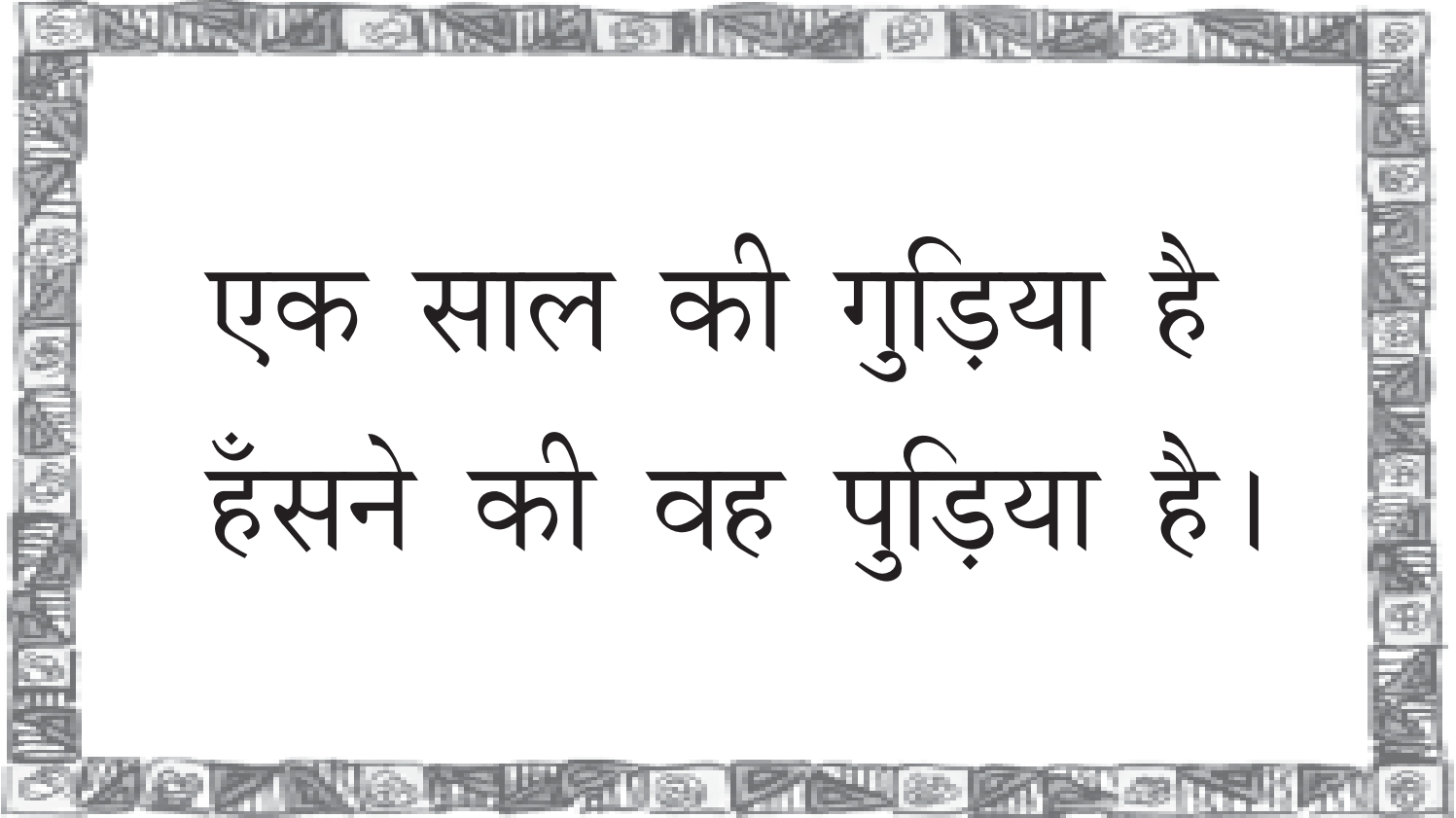
हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे

काम करूँ मैं बड़े-बड़े।

ऐसी भी क्या तुम्हें पड़ी
समय बताती घड़ी-घड़ी !

एक साल की गुड़िया है
हँसने की वह पुड़िया है।
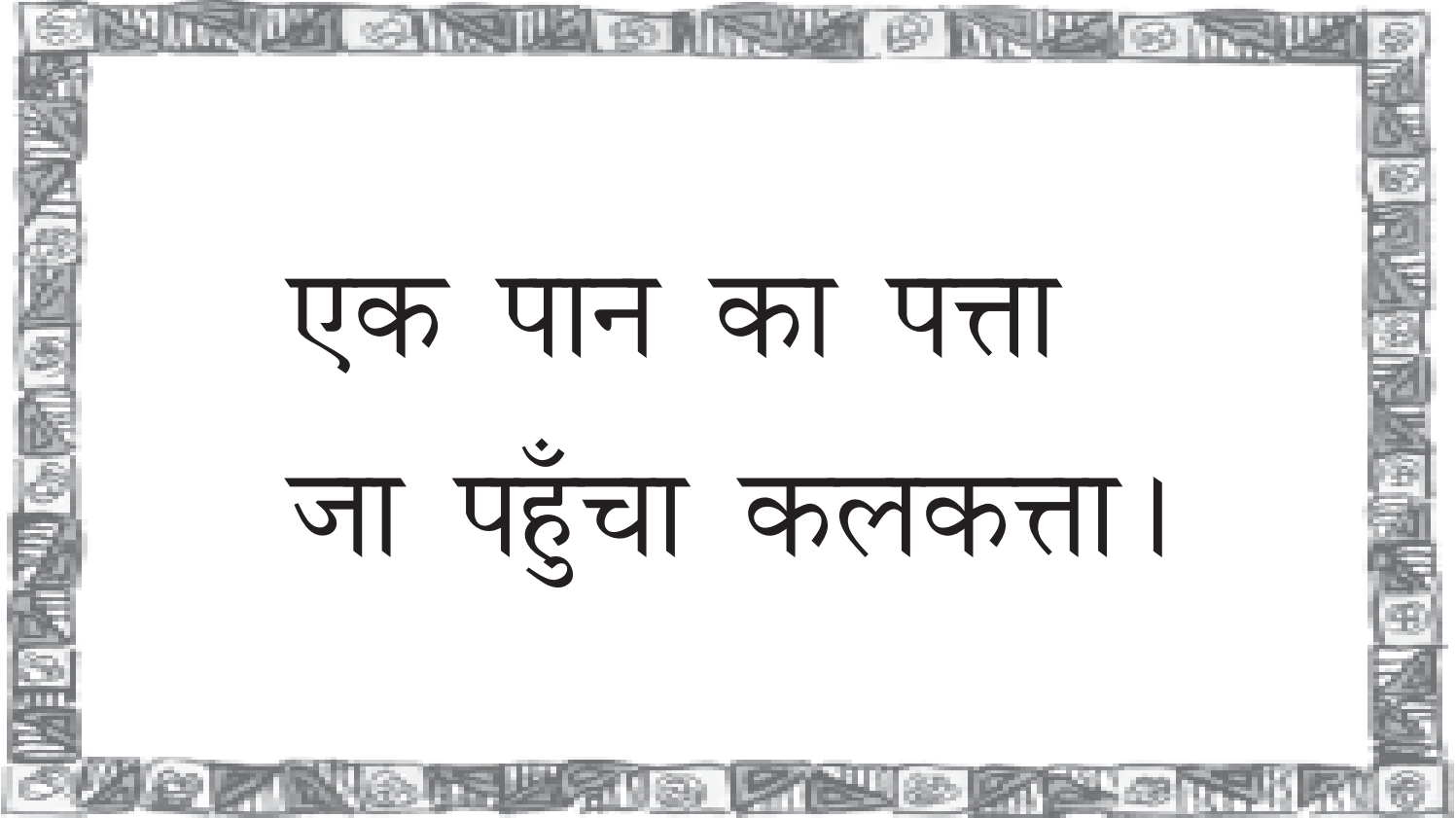
लट्टू घूम रहा सर सर
सर सर सर सर
सर सर सर।
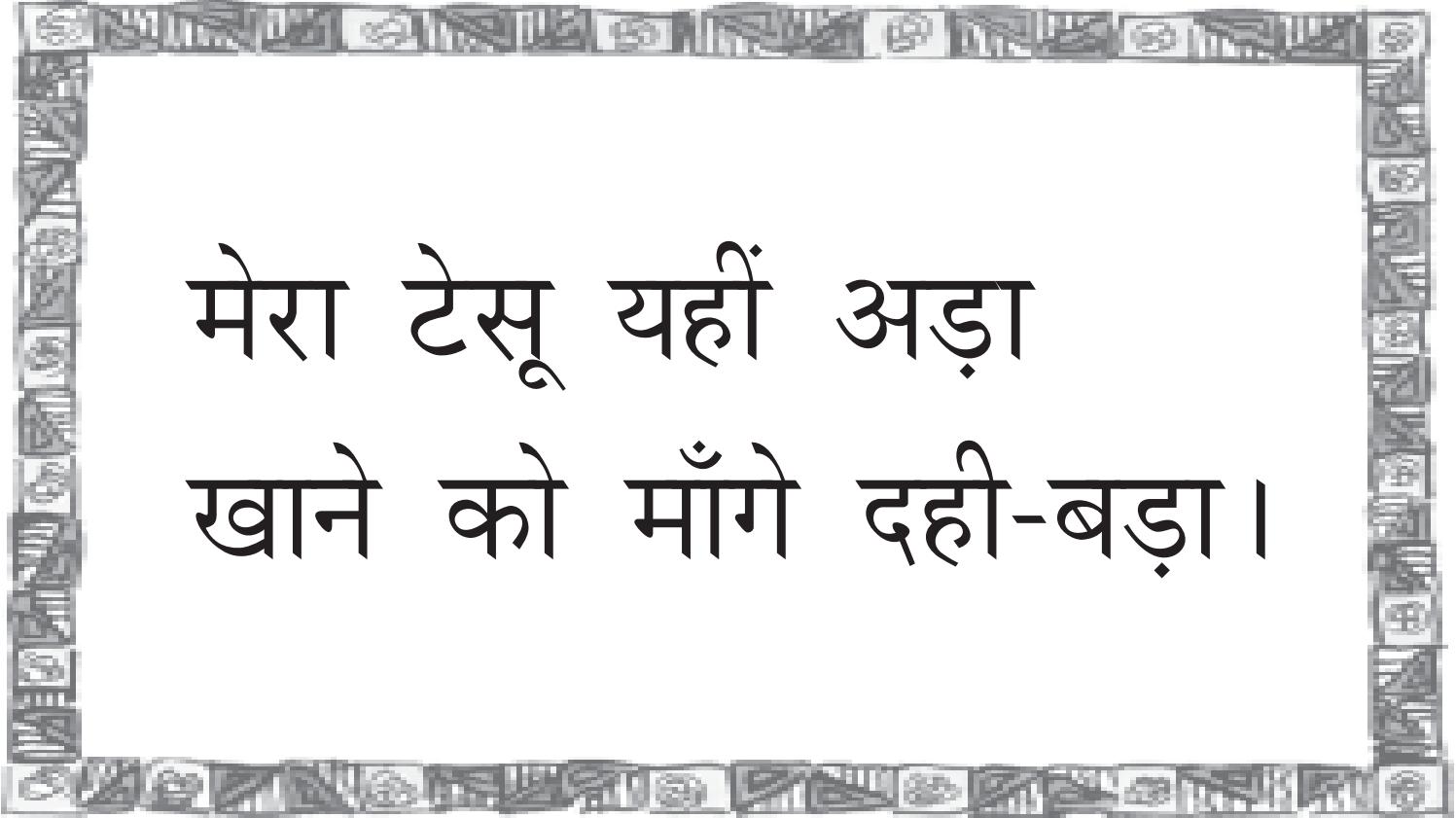
एक पान का पत्ता
जा पहुँचा कलकत्ता।

टेसू मेरा दिल्ली का
मन है उसका बिल्ली का।
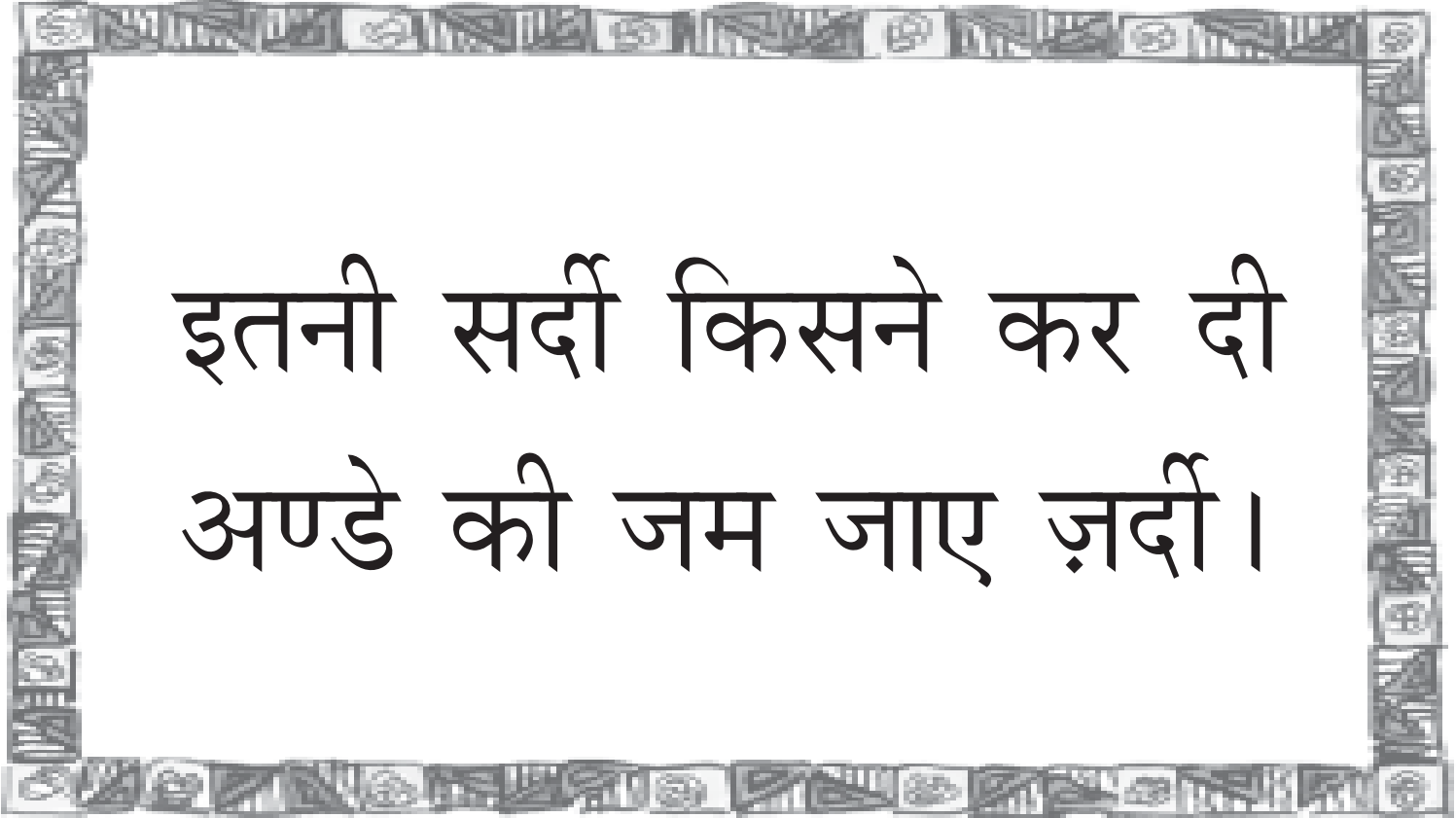
मेरा टेसू यहीं अड़ा
खाने को माँगे दही-बड़ा।
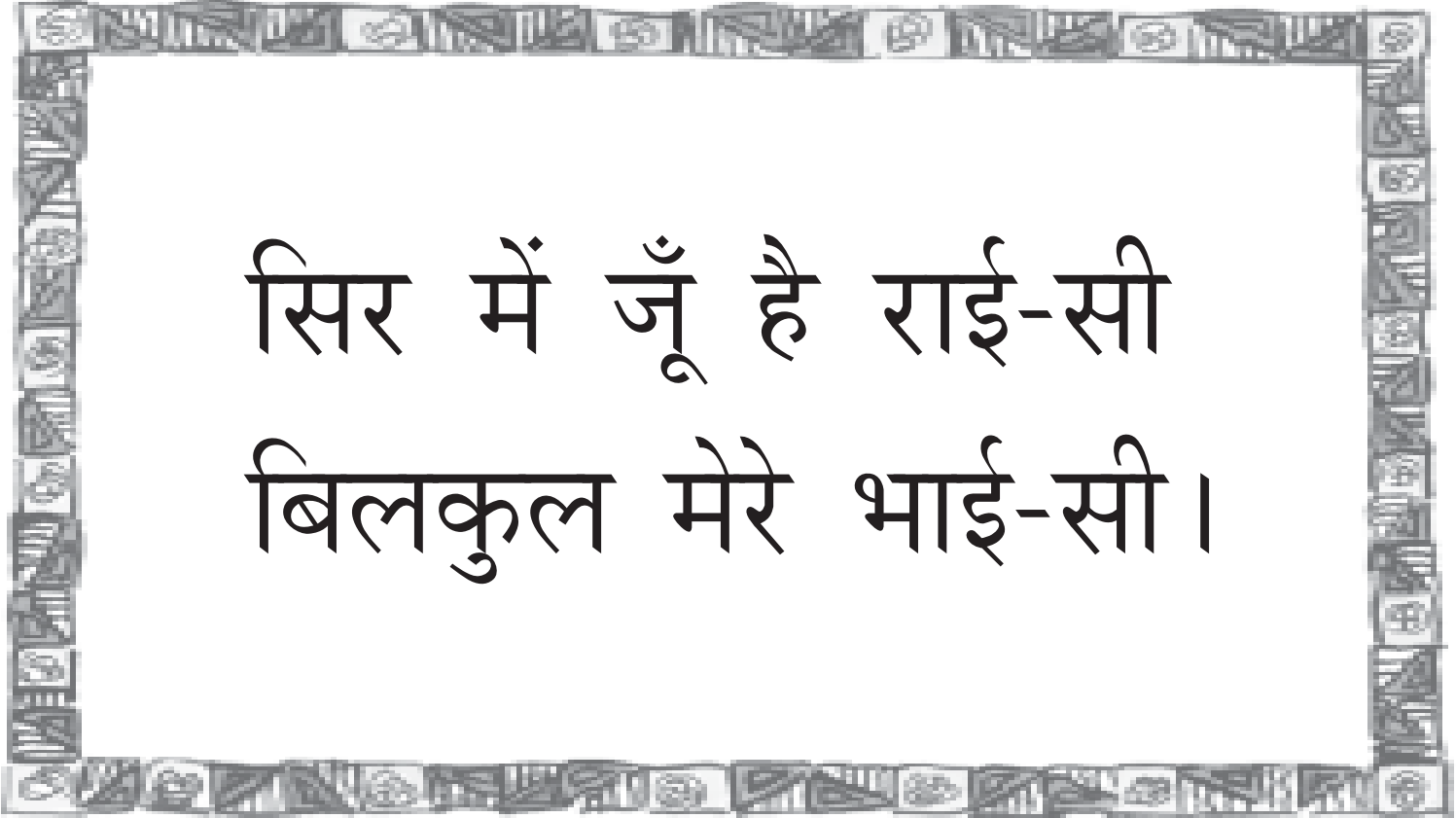
इतनी सर्दी किसने कर दी
अण्डे की जम जाए ज़र्दी।
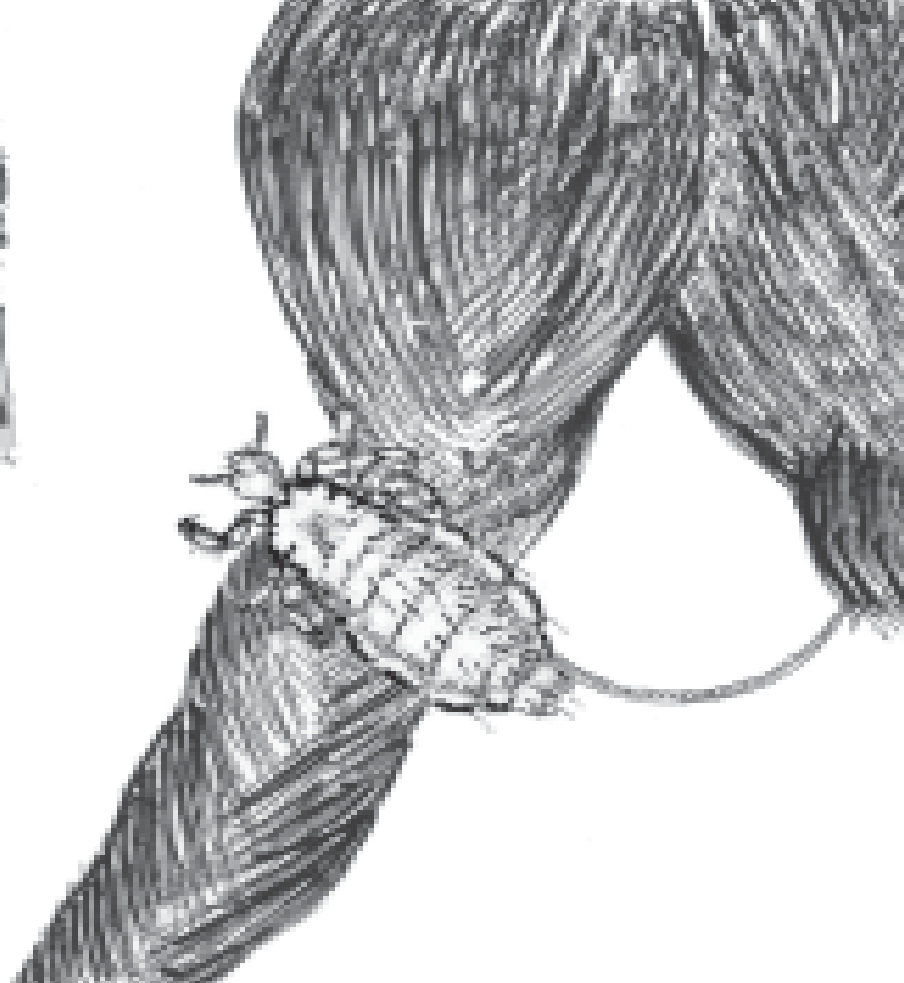
सिर में जूँ है राई-सी
बिलकुल मेरे भाई-सी।

इस किताब में संकलित कविताओं के रचनाकार इस प्रकार हैं-

दूध-जलेबी जग्गग्गा
पर इसमें है मग्गग्गा।

कृष्ण कुमार

उल्लू बैठा डाल पर
आँखें बड़ी निकालकर।

निरंकारदेव सेवक

बिल्ली बैठी पूछ रही है,
मैं आऊँ, मैं आऊँ?

प्रतिभा दासगुप्ता

मुर्गी अण्डा देती है
हमसे क्या ले लेती है?

निरंकारदेव सेवक

ताला है दरवाज़े पर
मैं कैसे जाऊँ अन्दर?

निरंकारदेव सेवक

एक सूखी लकड़ी
उस पर घूमे मकड़ी।

प्रीतवन्ती महरोत्रा

मकड़ी जाला बुनती है
कहाँ किसी की सुनती है!

सुशील शुक्ल

हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे
काम करूँ मैं बड़े-बड़े।

प्रीतवन्ती महरोत्रा

ऐसी भी क्या तुम्हें पड़ी
समय बताती घड़ी-घड़ी!

योगेन्द्रकुमार लल्ला

एक साल की गुड़िया है
हँसने की वह पुड़िया है।

मूलाराम जोशी

लट्टू घूम रहा सर सर
सर सर सर सर सर सर सर।

निरंकारदेव सेवक

एक पान का पत्ता
जा पहुँचा कलकत्ता।

सूर्यकुमार पाण्डेय

टेसू मेरा दिल्ली का
मन है उसका बिल्ली का।

मूलाराम जोशी

मेरा टेसू यहीं अड़ा
खाने को माँगे दही-बड़ा।

इतनी सर्दी किसने कर दी
अण्डे की जम जाए ज़र्दी।

सफदर हाशमी

सिर में जूँ है राई-सी
बिलकुल मेरे भाई-सी।

तेजी ग्रोवर

बच्चों के लिए कविताएँ ...

बच्चों के लिए कविता की कई पुस्तकें हम एक-साथ आपके सामने लाने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसी पुस्तकें जो 'साहित्य' हैं और भाषा के साथ अद्भुत खेल खेलती हैं। भाषा सीखने की प्रक्रिया में पढ़ने लायक इस तरह की सामग्री जो हमारी समझ में बच्चों में पढ़ने और लिखने की इच्छा पैदा करती है। पहली तीन किताबें हैं - **अक्कड़-बक्कड़, दूध-जलेबी जग्गग्गा, क्यों जी बेटा राम सहाय** - यानी दो, तीन, चार पंक्तियों की कविताओं के संग्रह। और फिर ज़रा बड़ी कविताओं के दो संकलन - **बैठ घोड़ा पानी पी** और **हाऊ हाऊ हप्प**। छठी किताब है **आपके जापानी हाइकू** - तीन-तीन पंक्ति की सुप्रसिद्ध पारम्परिक जापानी कविताएँ जो उन सभी पाठकों के लिए हैं जो कविता पढ़ने और लिखने का रस लेना चाहते हैं। पक्षियों, फूलों, पत्तों, कीट-पतंगों, चाँद-सितारों के सजीव चित्रों के साथ इस संकलन को बच्चे (और बड़े भी) खूब मज़े से पढ़ेंगे।

अक्कड़-बक्कड़ इस कड़ी की पहली किताब है। यह और **बैठ घोड़ा पानी पी** पीढ़ी-दर-पीढ़ी कई अनाम कवियों की पंक्तियों को जोड़-जोड़कर बनी कविताओं या गीतों का संकलन हैं। भारत के ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में इन जानदार गीतों की ध्वनियाँ खेलते हुए बच्चों की टोलियों के बीच आज भी सुनी जा सकती हैं। लेकिन कई कड़ियाँ और अन्तर्सम्बन्ध टूट जाने के कारण ये कविताएँ भी बड़ी कठिनाई से ही बच पाती होंगी। **अक्कड़-बक्कड़** उन विलुप्त होती कविताओं का एक ऐसा शुरुआती संकलन है जिसे शहर के बच्चे भी बहुत पसन्द कर रहे हैं - मानो उन्हें कहीं से कुछ याद आ रहा हो, कोई तार अचानक जुड़ गया हो।

हिन्दी के ऐसे कवियों की संख्या अधिक नहीं है जिन्होंने इन पारम्परिक गीतों जैसी खिलन्दड़ी और जीवन्त कविताएँ बच्चों के लिए लिखी हैं। **दूध-जलेबी जग्गग्गा**, **क्यों जी बेटा राम सहाय**, और **हाऊ हाऊ हप्प** में हमने छाँट-छाँटकर ऐसी कविताओं या कविता की पंक्तियों को संकलित किया है। **अक्कड़-बक्कड़** सहित अगर इन किताबों से बच्चे पढ़ने की शुरुआत करें, तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि उन्हें पढ़ना और लिखना अपने आप ही अच्छा लगने लगे। ठीक वैसे ही जैसे वे बोलना सीख जाते हैं। और ठीक वैसे ही जैसे वे स्कूल जाने से पहले ही अपने घर में बोली जा रही भाषा के पाँच हज़ार से भी ज़्यादा शब्द सीख जाते हैं। सीखने की इसी प्रक्रिया से वे पढ़ना भी सीख जाते हैं - बशर्ते पठन सामग्री में उनकी रुचि का संसार उन्हें मिले। इससे पढ़ना-लिखना सिखाना भी सहज और अर्थपूर्ण हो जाता है। जिन लोगों को पढ़ने या पढ़ाने का अच्छा-खासा अनुभव है वे बताते हैं कि इस रोमांचकारी घटना का अद्‌भुत आनन्द है कि एक दिन अचानक आपका बच्चा या छात्र आपको किसी पन्ने से अपने आप कुछ पढ़कर सुनाने लगता है!

पढ़ना सीखने की इस प्रक्रिया पर पिछले कई वर्षों से काफी सोच-विचार हुआ है। अगर आप इस सोच से गहराई से परिचित होना चाहते हैं तो अब तक खूब पढ़ी जा चुकी और बहुत उपयोगी सिद्ध हो चुकी पुस्तक **बच्चे की भाषा और अध्यापक** को ज़रूर पढ़ें। यह नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली से छपी है और इसके लेखक हैं कृष्ण कुमार।

- तेजी ग्रोवर

एकलव्य

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य है ऐसी शिक्षा का विकास करना जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि जब बच्चों को स्कूली समय से बाहर, घर में भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, तो स्कूली शिक्षा भी सार्थक हो जाती है। किताबें तथा पत्रिकाएँ ऐसे साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। एकलव्य ने शिक्षा, जनविज्ञान व बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ तथा सामग्री आदि भी विकसित एवं प्रकाशित की है।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, देवास व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा हरदा, उज्जैन, इन्दौर और परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्रों के माध्यम से कार्यरत है।